

श्री वीर-स्तवन

(राग-त्रोटक)

हे वीर तुम्हारी मुद्रा का अेक दृश्य दृषने आया हूं;
ओ शान्ति सुधा जल भरने को दो नयन कटोरे लाया हूं. १
अद्भुतवाणी से हृदय प्रकुद्विलत करने को उठ धाया हूं;
तुम यरणों से भस्तक घिसकर सभ कर्म यूरने आया हूं. २
मैं मोह के इन्द्रे में इंसकर सभ भूल गया सुध बुध तेरी;
अब दृष याद आती मुझको सो भूल भूलने आया हूं. ३
तुम से अेक अर्ज यही मेरी इस मोह को दूर उटा दीजे;
मैं अनुभव को जागृत करके, अनुपम रस पीने आया हूं. ४

